बाइबल टीचर

वर्ष 21 | अप्रैल 2024 | अंक 5

सम्पादकीय

जब मैं छोटा बालक था

शायद आपको आपके बचपन के दिन याद होंगे, बचपन का वो कूदना-उछलना और शरारतें करना, लेकिन जैसे-जैसे आप बड़े होते गये, आप समझदार बनते गये। कुछ लोग आयु में बढ़ते-बढ़ते बहुत समझदार हो जाते हैं और कुछ लोग उम्र के साथ वैसे बात नहीं करते जैसे करनी चाहिए। प्रेरित पौलुस ने कोरिन्थ में कलीसिया को अपनी पत्री में यह बात इसलिये लिखी थी क्योंकि कुछ लोग मसीही बनने के बाद भी बच्चों, जैसी बात कर रहे थे, वह कहता है, ''जब मैं बालक था तो मैं बालकों की नाई बोलता था, बालकों का सा मन था, बालकों की सी समझ थीं, परन्तु जब सियाना हो गया तो बालकों की बातें छोड़ दी।'' (1 कुरि. 13:11-12)।

पहिली शताब्दी में कलीसिया को कुछ आत्मिक वरदान मिले थे और जैसे-जैसे यह वरदान कलीसिया में इस्तेमाल होने लगे, कई लोगों में घमण्ड आ गया और पौलुस को यह बात कहनी पड़ी कि यदि मैं मनुष्य और स्वर्गदूत की बोलियाँ बोलूं और प्रेम न रखूं तो मैं ठनठनाता हुआ पीतल और झंझनाती हुई झांझ हूँ। और यदि मैं भविष्यवाणी कर सकूं, और सब भेदों और सब प्रकार के ज्ञान को समझूं, और मुझे यहाँ तक पूरा विश्वास हो, कि मैं पहाड़ों को हटा दूं, परन्तु प्रेम न रखूँ, तो मैं कुछ भी नहीं। जितने आत्मिक वरदान सदस्यों को मिलते जा रहे थे उतनी ही वहाँ प्रेम की कमी हो रही थी, और तभी पौलुस को यह कहना पड़ा कि बालकों की सी बातें छोड़ दो, मैं बड़ा तू छोटा-सी बातें छोड़ दो। प्रेम की भाषा बोलो भाई।

बाइबल यह शिक्षा देती है कि मसीही लोगों को आपस में प्रेम से रहना चाहिए। यहून्ना लिखता है, ''हे भाईयों आपस में प्रेम रखो, क्योंकि परमेश्वर प्रेम हैं।'' (1 यूहन्ना 4:7)। कई बार कलीसिया में छोटी-छोटी बातों में मतभेद हो जाते हैं। कोरिन्थ की कलीसिया में भाईयों में काफी मतभेद थे। परमेश्वर चाहता है कि उसकी कलीसिया के लोग आत्मिक रूप से बढ़ें। जैसे-जैसे हम विश्वास में बढ़ते हैं, त्यों-त्यों हमें कुछ पुरानी बुरी आदतों को छोड़ देना चाहिए।

मत्ती के 18:3 में हम पढ़ते हैं कि यीशु ने एक बात कही थी कि ''यदि तुम न फिरो और बालकों के समान न बनो, तो स्वर्ग के राज्य में प्रवेश करने नहीं पाओगे।'' चार पद में लिखा है, ''जो कोई अपने आप को इस बालक के समान छोटा करेगा, वह स्वर्ग के राज्य में बड़ा होगा। प्रेरित पौलुस कुलुस्सियों 3:1-10 में कहता है कि मसीही बनने के बाद किन बातों को हमें अपने अंदर रखना है और किन बातों को छोड़ देना है। तीसरे पद में कहता है कि तुम तो मर गए और तुम्हारा जीवन मसीह के साथ परमेश्वर में छिपा हुआ है और इसलिये वह पाँचवें पद में लिखा है, ''इसलिये अपने उन अंगो को मार डालो, जो पृथ्वी पर हैं, अर्थात् व्यभिचार, अशुद्धता, दुष्टकामना, बुरी लालसा और लोभ तथा 6 और 7 पद में लिखा है इन्हीं के कारण परमेश्वर का प्रकोप आज्ञा न मानने वालों पर पड़ता है। और तुम भी, जब इन बुराईयों में जीवन बीताते थे, तो इन्हीं के अनुसार चलते थे, पर अब तुम भी इन सब को अर्थात् क्रोध, रोष, बैर-भाव, निंदा और मुँह से गालियाँ बंकना ये बातें छोड़ दो। एक-दूसरे के साथ झूठ मत बोलो क्योंकि तुमने पुराने मनुष्यत्व को उसके कामों समेत उतार डाला है। और नया मनुष्यत्व पहिन लिया है। जो अपने सृजनहार के स्वरूप के अनुसार ज्ञान प्राप्त करने के लिये नया बनता जाता है। (पद 8-10)। एक मसीही बनने के बाद हम ऐसी बातों को छोड़ देते हैं जो गलत है।

मैं, यहाँ यह कहने का प्रयास कर रहा हूँ कि छोटे बच्चों जैसी कुछ बातें हमें अपने अंदर रखनी चाहिए और कुछ छोड़ देनी चाहिए। छोटे बच्चों में एक बड़ी अच्छी आदत यह होती है कि उनका विश्वास उन पर होता है जो उनकी देखभाल करते हैं। छोटे बच्चों को यह फिकर नहीं होती सुबह-शाम क्या खायेंगे? माता-पिता पर बच्चों का पूरा भरोसा होता है। ऐसे ही हम लोगों को अपने पिता परमेश्वर पर पूरा भरोसा होना चाहिए। यीशु ने कहा था मैं तुमसे इसलिये कहता हूँ कि अपने प्राण की चिंता न करना कि हम क्या खायेंगे? और क्या पिएंगे? और न शरीर की क्या पहिनेगें? क्या प्राण भोजन से और शरीर वस्त्र से बढ़कर नहीं। आकाश के पक्षियों को देखो। वे न बोते, न काटते हैं, और न खत्तों में बटोरते हैं। तौ भी तुम्हारा स्वर्गीय पिता उनको खिलाता है। क्या तुम उनसे अधिक मूल्य नहीं रखते? (मत्ती 6:25-26)। बालकों की तरह हमारा भरोसा परमेश्वर में होना चाहिए।

बच्चे बड़े मासूम होते हैं। इसी तरह से हमें पाप से दूर रहना चाहिए। हम जानते हैं कि हमारे पापों को यीशु के लोहू में धोया गया है। (1 यूहन्ना 1:7) एक छोटा बालक खुश रहता है कल नये दिन के लिये, वो जानता है कल फिर नया दिन और नया सवेरा, खुशी का समय, सो वह खुश रहता है। उदास होना छोड़ दें, प्रभु में सदा आनंदित रहें। (फिलि 4:4)। बच्चे लड़ते हैं झगड़ते हैं परन्तु थोड़े समय बाद वे सब कुछ भूलकर पहिले जैसे ही हो जाते हैं। एक ऐसी आदत बनाये कि दूसरों को माफ करें और भूल जायें। यीशु ने कहा था ''इसलिये यदि तुम मनुष्य के अपराध क्षमा करोगे, तो तुम्हारा स्वर्गीय पिता भी तुम्हें क्षमा करेगा। (मत्ती 6:14)। बच्चों में एक और बात होती है कि वे छोटे से कुत्ते के बच्चे के साथ खेलने लगते हैं। टूटे-फूटे खिलौने के साथ खेलना उन्हें अच्छा लगता है, इसके लिये फिलि. 4:11-13 को भी पढ़िये- मुझे लगता है, कि यह एक ऐसी बात हैं जो हम बड़ों को सीखनी हैं, जो कुछ मिल जाए उसके लिये खुश हो और धन्यवादी दें। यह आवश्यक है कि हम अच्छी आदतों को पकड़ें रहें और बुरी आदतों को छोड़ दें। कई बच्चों में स्वार्थपन की आदत होती हैं, और कई बड़े लोगों में भी बहुत स्वार्थपन होता है। एक मसीही होते हुए हमें स्वार्थी नहीं

होना चाहिए। जब मैं बालक था तब अपनी चीज किसी को नहीं देता था। मसीहीयों में स्वार्थपन नहीं होना चाहिए। बच्चे कभी भी मुँह से कुछ भी बोल देते हैं, और यह एक बात हम बड़ों को सीखनी चाहिए। हम कभी भी जल्दबाजी में कुछ भी बोल देते हैं जिससे दूसरों को चोट पहुँचती हैं। बाइबल कहती है हमें बोलने में धीमा होना चाहिए।

अच्छा होगा यदि हम अपने अंदर आत्मिक बातों को उत्पन्न करें तथा बच्चों जैसी विशेषताओं को अपने अंदर पैदा करें। बुरी आदतों से छुटकारा पायें। छोटे बच्चें में एक और गलत आदत होती है कि वे अपने साथ वाले दूसरे बच्चे से नफरत करते हैं, उनमें जलन आ जाती है। हमें सीखना चाहिए कि बाइबल कहती है रोने वालों के साथ रो और खुशी करने वालों के साथ खुशी मनाओ। एक और विशेषता जो अक्सर बच्चों में देखी जाती है और वो है उनमें सबर या धीरज नहीं होता। बाइबल हमें सिखाती है कि हम में धीरज होना चाहिए। हम धीरज से स्वर्ग की बाट जो रहे हैं। धीरज रखना सीखें (रोम. 5:3) पौलुस कहता है, ''केवल यहीं नहीं, वरन हम क्लेशों में भी घमण्ड करें, यही जानकर कि क्लेश से धीरज। और धीरज में खरा निकलना और खरा निकलने से आशा उत्पन्न होती है। (रोमियों 5:3-4)।

कई बार छोटे बच्चे बड़े ही लापरवाह होते हैं। बच्चे अपना स्कूल का होम वर्क नहीं करते। उसी प्रकार से बड़ें लोग भी लापरवाह और गैर-जिम्मेदार हो जाते हैं। एक मसीह होने के नाते हमें एक जिम्मेदार इंसान होना चाहिए। यदि हम स्वर्ग में जाना चाहते हैं तो हमें अपनी आत्मिक जिम्मेदारियों को कलीसिया के प्रति निभाना पड़ेगा। अराधना को लोग कोई ध्यान नहीं देते। (इब्रा. 10:25)। कभी चले जाते हैं और कभी नहीं जाते। कलीसिया के कार्यों में भाग लेना भी बड़ा आवश्यक है। (1 कुरि. 15:58)।

अन्त में एक और बात बताना चाहता हूँ कि बच्चों में एक और बुरी आदत यह होती है कि वे हमेशा दूसरों पर दोष लगाते हैं। हमेशा यहीं कहते हैं कि मैंने ऐसा नहीं किया यह तो उसने किया है। हमें एक-दूसरे पर दोष नहीं लगाना चाहिए (मत्ती 7)। आदम ने भी हव्वा पर दोष लगाया था।

अन्त में मैं यहीं कहना चाहूँगा मसीहीयत में आगे बढ़ते, अपने जीवन में बच्चों की अच्छी विशेषतायें अपनाये तथा बुरी बातें छोड़ दें।

सच्चाई मैं हूँ

(यूहन्ना 14:6)

सनी डेविड

संसार में ऐसी बहुतेरी वस्तुएं हैं जिन से हम घृणा करते हैं। परन्तु कुछ वस्तुएं ऐसी भी हैं जिनसे हम प्रेम करते हैं। और सच्चाई ऐसी ही एक वस्तु है। हम सभी सच्चाई को जानना और सच्चाई को सुनना पसन्द करते हैं। हमने न्यायालय और कचहरियां बना रखी हैं, क्योंकि हम सच्चाई जानना चाहते हैं। यदि कोई मनुष्य आकर हमें विज्ञान या राजनीति इत्यादि के बारे में एक नया समाचार देता है, तो हम उसकी पुष्टि रेडियो अथवा समाचार पत्रों द्वारा करना

चाहते हैं, क्योंकि हमारा विश्वास है कि रेडियो तथा समाचार पत्रों द्वारा हमें सच्ची खबरें सुनने और पढ़ने को मिलती हैं। संसार में नित्य नई-नई खोजें हो रही हैं, क्योंकि हम बहुतेरी अन्य बातों के बारे में सच्चाई जानना चाहते हैं। परन्तु सच्चाई अक्सर हमेशा हमें प्राप्त नहीं होती, क्योंकि हम कभी-कभी झूठ को ही सच्चाई समझकर पकड़ लेते हैं। जैसे कि अभी कुछ ही वर्ष पहिले हमने समाचार पत्रों में पढ़ा था कि डॉक्टरों का कहना है कि कॉफी पीना मनुष्य के लिये हानिकारक है। लेकिन फिर एक नई खोज से पता चला कि कॉफी नहीं परन्तु चाय वास्तव में हानिकारक है। इसी प्रकार कुछ समय पहिले हम ने सुना था कि ऐस्प्रिन हृदय के लिये हानिकारक है। परन्तु अभी कुछ ही समय पूर्व मैंने एक समाचार पत्र में पढ़ा, कि एक नई खोज के अनुसार जो मनुष्य प्रतिदिन एक ऐस्प्रिन खाएगा उसे कभी दिल का दौरा नहीं पड़ेगा। खैर, मैं आपको यह सलाह नहीं दे रहा हूं कि क्या खाना और क्या पीना अच्छा है या बुरा, लेकिन मैं आपको यह बता रहा हूं कि किस तरह अक्सर हम झूठ को सच्चाई समझकर मान लेते हैं। कभी-कभी हम बाजार से कोई चीज असली समझकर मोल ले आते हैं, परन्तु घर में आकर हमें पता चलता है कि हम वास्तव में धोखें में आ गए और नकली को असली समझकर ले आए। वास्तव में, आज के इस युग में, जबकि नकली वस्तुओं को असली बनाकर लोगों को दिया जा रहा है, सच्चाई की परख करना बड़ा ही आवश्यक है।

परन्तु सच्चाई की परख करना या सच्चाई को जानना आज हमें न केवल सांसारिक या भौतिक दृष्टिकोण से ही परन्तु उससे भी अधिक आत्मिक दृष्टिकोण से आवश्यक है, और विशेषरूप से इसलिये जबकि आज अनेक तरह की बातों को सच्चाई बनाकर पेश किया जा रहा है। परन्तु सच्चाई क्या है? यानी, कुछ बातें ऐसी हैं जिनके बारे में हमें सच्चाई को जानना आवश्यक नहीं है, क्योंकि उनकी सच्चाई एक बार सदा के लिये प्रमाणित हो चुकी है। परमेश्वर का अस्तित्व एक सच्चाई है, क्योंकि सम्पूर्ण सृष्टि उसके अस्तित्व को प्रगट करती है। मनुष्य का जीवन एक सच्चाई है, और जहां जीवन है वहां जन्म भी अवश्य है, क्योंकि जन्म के बिना जीवन असम्भव है। परन्तु जहां जीवन है वहां मृत्यु भी अवश्य है, और हम सब इसे स्वीकार करते हैं अर्थात् ये सब बातें सत्य हैं, और इनसे इन्कार नहीं किया जा सकता।

परन्तु मृत्यु के बाद हम कहां जा रहे हैं? मेरे कहने का अर्थ यह हैं, कि देह से अलग होकर आत्मिक भाव से रहने के लिये हम कहां जा रहे हैं? इसमें कोई संदेह नहीं कि हम में से हर एक स्वर्ग में जाने की इच्छा वा आशा रखता है। परन्तु प्रश्न यह नहीं है, कि आप की क्या इच्छा या आशा है? किन्तु प्रश्न यह है, कि क्या आप निश्चित रूप से, सचमुच में, जानते हैं कि आप स्वर्ग में प्रवेश करेंगे? जिस मार्ग पर आप चल रहे हैं क्या उसको उस पर पूरा भरोसा है कि वह मार्ग आपको परमेश्वर के पास ले जाएगा? क्या आप इस बात को प्रमाणित कर सकते हैं? किन्तु शायद आप कहें, कि यह तो कोई भी प्रमाणित नहीं कर सकता, क्योंकि उस मार्ग पर हम सब विश्वास से चल रहे हैं। जी हां, विश्वास एक बड़ी ही महत्वपूर्ण वस्तु है, और एक बड़ा ही प्रमुख सिद्धांत है। परन्तु हमारे विश्वास का आधार क्या है? मैं ऐसे अनेक लोगों को जानता हूं, जो बिना जाने वा

समझे किसी वस्तु पर विश्वास करके चल रहे हैं, अर्थात् उनका विश्वास अन्ध-विश्वास है। उदाहरण के तौर पर, जैसे कुछ लोग घर में एक तख्ते पर वेदी बना लेते हैं और उस पर वे एक बाइबल रख देते हैं और एक दो फोटो लगा देते हैं, जिसे वे कहते हैं कि ये मसीह या मरियम की फोटो है। दिन में एक दो बार वे उसके सामने आकर सिर झुकाकर प्रार्थना कर लेते हैं, कभी-कभार या यूँ कहिए कि साल में एक दो बार वे गिरजा चले जाते हैं, और इन सब बातों के आधार पर वे सोचते हैं कि वे स्वर्ग में प्रवेश करेंगे। परन्तु यह अन्ध-विश्वास है। इसी प्रकार, अनेक अन्य लोग नाना प्रकार की वस्तुओं की भक्ति वा उपासना कर रहे हैं। परन्तु प्रश्न यह है, कि जिस वस्तु की भक्ति वा उपासना आप कर रहे हैं, जिस मार्ग पर आप चल रहे हैं, क्या आप वास्तव में जानते हैं कि वह परमेश्वर का मार्ग हैं? क्या वह वास्तव में सच्चाई है? क्या आप प्रमाणित कर सकते हैं?

जब यीशु मसीह को पीलातुस के सामने लाया गया कि वह उसे जाँच कर लोगों को उसे क्रूस पर चढ़ाने की अनुमति दे, और जब वह उसमें कोई भी दोष न पा सका तो वह इस बात से परेशान हो उठा, कि फिर लोग उसे क्यों क्रूस पर चढ़ाना चाहते हैं? और जब उसने यीशु से जानना चाहा, तो यीशु ने उस से कहा, ''मैंने इसलिये जन्म लिया, और इसलिये जगत में आया हूं कि सत्य पर गवाही दूं जो कोई सत्य का है, वह मेरा शब्द सुनता है।'' लिखा है, कि इस पर पीलातुस ने उस से पूछा, ''सत्य क्या है? (यूहन्ना 18:37, 38)। परन्तु एक अन्य स्थान पर लिखा है, कि यीशु ने कहा, ''मार्ग ओर सच्चाई और जीवन मैं हूं, बिना मेरे द्वारा कोई पिता के पास नहीं पहुंच सकता।'' (यूहन्ना 14:6)। दूसरो शब्दों में, यदि कोई परमेश्वर के पास पहुंचना या स्वर्ग में प्रवेश करना चाहता है, तो यीशु स्वर्ग का मार्ग है, यदि **कोई** जीवन पाना चाहता है तो वह अनन्त जीवन के जल का सोता है, और यदि कोई सच्चाई जानना चाहता है तो यीशु वह सच्चाई है जिसमें हमें पाप के अन्धकार से छुटकारा प्राप्त होता है। परन्तु इसका प्रमाण क्या है?

इसका प्रमाण यीशु का वह क्रूस है जिसके ऊपर वह सारी मानवता के पापों के प्रायश्चित के लिये जमीन और आस्मान के बीच लटकाया गया। इसका प्रमाण यीशु की वह खाली कब्र है जिसके भीतर मरणोपरान्त वह गाड़ा गया था और जो तीसरे दिन खाली पाई गई थी। मसीह के जन्म से सैकड़ों वर्ष पूर्व परमेश्वर ने भविष्यवक्ताओं के द्वारा प्रगट किया था, कि उसका वचन देहधारी होकर पृथ्वी पर आएगा जो लोगों का उनके पापों से उद्धार करेगा। और आज से दो हजार वर्ष पूर्व परमेश्वर ने अपनी इस प्रतिज्ञा को उस समय पूरा किया जब यीशु का जन्म बैतलहम नाम के एक छोटे से स्थान पर हुआ। यीशु का जीवन अद्भुत था। उसके काम आश्चर्यपूर्ण थे। उसके उपदेश महान् थे। और उसका व्यक्तित्व विचित्र था। क्योंकि वह परमेश्वर का पुत्र था। परन्तु उसी की मानसा और ज्ञान के अनुसार कुछ लोग परमेश्वर के पुत्र के शत्रु बन गए। उन्होंने उसे लेकर उस पर कई प्रकार के अत्याचार किए, और फिर उसे एक क्रूस के ऊपर चढ़ाकर मार डाला। किन्तु, यीशु ने इस बारे में स्वयं एक जगह इस प्रकार कहा था, ''क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उसने अपना एकलौता पुत्र दे दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे, वह नाश न हो, परन्तु अनन्त जीवन पाए।'' (यूहन्ना 3:16)। न केवल यीशु ने

अपनी मृत्यु के ही बारे में लोगों को बताया था परन्तु उसने यह भी प्रगट किया था कि वह किस रीति से मारा जाएगा, और फिर तीसरे दिन जी उठेगा। परन्तु इसकी क्या आवश्यकता थी?

परमेश्वर मनुष्य से प्रेम करता है। परन्तु परमेश्वर के पास पहुँचने से मनुष्य को केवल एक ही वस्तु रोकती है-अर्थात, पाप। पाप के कारण कोई भी मनुष्य परमेश्वर के पास नहीं पहुंच सकता। सो परमेश्वर ने मनुष्य को पाप से छुटकारा दिलवाने के लिये अपने वचन को देहधारी बनाकर पृथ्वी पर भेज दिया। उसने अपने पुत्र को क्रूस पर चढ़वाकर सारी मानवता के पापों का प्रायश्चित बनाया, अर्थात क्रूस के ऊपर यीशु की मृत्यु आपके और मेरे पापों के कारण हुई, वह हमारे पापों का प्रायश्चित है। और इस कारण, आज हम में से कोई भी यीशु में विश्वास लाकर और उसकी आज्ञाओं को मानकर उसके द्वारा परमेश्वर के पास पहुंच सकता है। यीशु ने कहा, कि जो मनुष्य मुझ में विश्वास करेगा, और अपना मन फिराएगा, और अपने पापों की क्षमा के लिये जल के भीतर बपतिस्मा लेगा मैं उसका उद्धार करूंगा। (मरकुस 16:16; लूका 13:3)। वास्तव में, मार्ग, सच्चाई और जीवन यीशु ही है, और, ''यह बात सच और हर प्रकार से मानने के योग्य है, कि मसीह यीशु पापियों का उद्धार करने जगत में आया।'' (1 तीमुथियुस 1:15)। सो परमेश्वर अपनी सच्चाई को ग्रहण करने और उस पर चलने के लिये आपको शक्ति दे।

कलीसिया का इतिहास

जे. सी. चोट

प्रेरितों के काम के दूसरे अध्याय में प्रभु की कलीसिया अर्थात् राज्य की स्थापना या आरंभ होने की अवस्था को दर्शाया गया है। प्रेरित जन यरूशलेम में है, उन पर पवित्र आत्मा उंडेला गया, तथा बहुत से देशों के लोग वहां पर एकत्रित थे क्योंकि वे पिन्तेकुस्त के लिये वहां पर आए थे, पतरस अन्य प्रेरितों के साथ खड़े होकर बताता है कि यह सब उसी के अनुसार है जो कि योएल भविष्यद्वक्ता के द्वारा कहा गया था, यीशु मसीह की मृत्यु के पश्चात अंत के दिनों का आरंभ हो चुका है, मन फिराव और पापों की क्षमा का प्रचार किया गया, लगभग तीन हज़ार मनुष्यों ने सुसमाचार सुना और बपतिस्मा लिया, और प्रभु ने उन्हें अपनी कलीसिया में मिलाया। तब यरूशलेम से लेकर सारे यहूदिया और सामरिया व पृथ्वी के छोर तक सुसमाचार प्रचार किया गया तथा आकाश के नीचे की सारी सृष्टि ने सुना। (प्रेरितों 1:8; मत्ती 28: 19, 20; मरकुस 16:15, 16; कुलुस्सियों 1:23)।

प्रेरितों के दिनों में कलीसिया ने बहुत उन्नति की। यह शीघ्रता से बढ़ी। पौलुस के मसीही बन जाने के बाद, उसने तीन प्रचारक यात्राएं की, सुसमाचार का प्रचार उसने केवल यहूदियों में ही नहीं परन्तु अन्य जातियों में भी किया। परिणाम स्वरूप बहुतेरे लोगों

ने विश्वास किया तथा प्रभु की कलीसिया की अनेक मंडलियां एशिया और यूरप में स्थापित हुई। किन्तु यह सब सरलता से नहीं हो गया, क्योंकि उन दिनों में मसीहीयों पर बड़ा उपद्रव हो रहा था। उपद्रव का आरंभ सबसे पहले यरूशलेम में हुआ, व इसके कारण चेले इधर-उधर तित्तर-बित्तर हो गए, और विभिन्न स्थानों में सुसमाचार सुनाते हुए फिरे। (प्रेरितों 8:1-4)। जैसे-जैसे समय व्यतीत होता गया, रोमी लोग मसीहीयों की निन्दा करने व अकारण ही उन पर दोष लगाने लगे, तथा रोम और समस्त रोमी साम्राज्य में उन्हें कड़ा दण्ड दिया जाने लगा। अन्त में पौलुस को भी बंदी बनाकर जांच के लिये रोम ले जाया गया। संसार का इतिहास हमें बताता है कि यूहन्ना के अतिरिक्त सारे प्रेरितों को मसीह के कारण शहीद होना पड़ा। सैकड़ों व हज़ारों और कदाचित लाखों अन्य मसीहियों को भी अपने प्राणों की आहूति देनी पड़ी।

इतना अधिक अत्याचार होते हुए भी कलीसिया दिन प्रतिदिन बढ़ी और फैली। वह उपद्रव नहीं था जिस के कारण कलीसिया को अत्यंत आघात सहना पड़ा, परन्तु इसका कारण स्वयं कलीसिया के ही बीच में से था। प्रेरित पौलुस ने पहले ही से उस दिन के विषय में बता दिया था जबकि धर्म का त्याग होने को था। दूसरे शब्दों में वह यह कह रहा था कि इस प्रकार के दिन आएंगे जब प्रभु की कलीसिया के अनेक सदस्य सत्य से फिर जाएंगे। आईये, इस पर ध्यान दें कि वह क्या कह रहा है: "हे भाइयो, हम अपने प्रभु यीशु मसीह के आने, और उसके पास अपने इक्ट्ठे होने के विषय में तुम से विनती करते हैं। कि किसी आत्मा, या वचन, या पत्री के द्वारा जो कि मानो हमारी ओर से हो, या समझ कर कि प्रभु का दिन आ पहुंचा है, तुम्हारा मन अचानक अस्थिर न हो जाए; और न तुम घबराओ। किसी रीति से किसी के धोखे में न आना क्योंकि वह दिन न आएगा, जब तक धर्म का त्याग न हो ले, और वह पाप का पुरुष अर्थात् विनाश का पुत्र प्रगट न हो। जो विरोध करता है, और हर एक से जो परमेश्वर, या पूज्य कहलाता है, अपने आप को बड़ा ठहराता है, यहां तक कि वह परमेश्वर के मंदिर में बैठकर अपने आप को परमेश्वर प्रगट करता है। क्या तुम्हें स्मरण नहीं कि, जब मैं तुम्हारे यहां था, तो तुम से यह बातें कहा करता था? और अब तुम उस वस्तु को जानते हो, जो उसे रोक रही है, कि वह अपने ही समय में प्रगट हो। क्योंकि अधर्म का भेद अब भी कार्य करता जाता है, पर अभी एक रोकने वाला है, और जब तक वह दूर न हो जाए, वह रोके रहेगा। तब वह अधर्मी प्रगट होगा, जिसे प्रभु यीशु अपने मुंह की फूंक से मार डालेगा, और अपने आगमन के तेज से भस्म करेगा। उस अधर्मी का आना शैतान के कार्य के अनुसार सब प्रकार की झूठी सामर्थ, और चिन्ह, और अदभुत काम के साथ, और नाश होने वालों के लिये अधर्म के सब प्रकार के धोखे के साथ होगा; क्योंकि उन्होंने सत्य के प्रेम को ग्रहण नहीं किया जिस से उनका उद्धार होता। और इसी कारण परमेश्वर उन में एक भटका देने वाली सामर्थ को भेजेगा ताकि वे झूठ की प्रतीति करें। और जितने लोग सत्य की प्रतीति नहीं करते वरन् अधर्म से प्रसन्न होते है, सब दण्ड पाए।" (2 थिस्सलुनीकियों 2:1-12)। यहां देखें कि पौलुस ने कहा कि अधर्म का भेद उन के बीच में उस समय भी कार्य कर रहा था। उसने आगे कहा, "परन्तु आत्मा स्पष्टता से कहता है कि आने वाले समयों में

कितने लोग भरमाने वाली आत्माओं और दुष्टात्माओं की शिक्षाओं पर मन लगाकर विश्वास से बहक जाएंगे। यह उन झूठे मनुष्यों के कपट के कारण होगा; जिन का विवेक मानो जलते हुए लोहे से दागा गया है। जो व्याह करने से रोकेंगे, और भोजन की कुछ वस्तुओं से परे रहने की आज्ञा देंगे; जिन्हें परमेश्वर ने इसलिये सृजा कि विश्वासी और सत्य के पहिचानने वाले उन्हें धन्यवाद के साथ खाएं" (1 तीमुथियुस 4:1-3)। इसी प्रकार से इफिसुस में कलीसिया के अध्यक्षों से वार्तालाप करते हुए पौलुस ने कहा, "इसलिये अपनी और पूरे झुंड की चौकसी करो; जिसमें पवित्र आत्मा ने तुम्हें अध्यक्ष ठहराया है; कि तुम परमेश्वर की कलीसिया की रखवाली करो, जिसे उसने अपने लोहू से मोल लिया है। मैं जानता हूं, कि मेरे जाने के बाद फाड़ने वाले भेड़िए तुम में आएंगे, जो झुंड को न छोड़ेंगे। तुम्हारे ही बीच में से भी ऐसे-ऐसे मनुष्य उठेंगे, जो चेलों को अपने पीछे खींच लेने को टेढ़ी-मेढ़ी बातें कहेंगे। इसलिये जागते रहो; और स्मरण करो; कि मैं ने तीन वर्ष तक रात दिन आंसू बहा बहाकर, हर एक को चितौनी देना न छोड़ा। "(प्रेरितों 20:28-31)।"

जिस प्रकार से पौलुस ने चेतावनी दी थी, कलीसिया के बीच में से बहुतेरे ऐसे लोग उठे जो मसीह के अनुयायीओं को बहकाने व अपनी और खींचने लगे। संसार का इतिहास हमें बताता है कि धर्म के त्याग का आरंभ कलीसिया के नियंत्रण पर आक्रमण से हुआ। प्रभु की योजनानुसार हर एक मंडली अन्य मंडलियों से स्वतंत्र होनी चाहिए व प्रत्येक मंडली में उसके अपने अध्यक्ष तथा सेवक होने चाहिए। किन्तु, ज्यों-ज्यों समय व्यतीत होता गया बहुत सी मंडलियां एक अध्यक्ष अर्थात् बिशप को अन्य मंडलियों पर ऊंचा करने लगी, और फिर कुछ समय के बाद एक बिशप को अधिकार मिल गया कि वह अनेक मंडलियों पर नियंत्रण रखे, इसका अंतिम परिणाम यह निकला कि एक व्यक्ति को सम्पूर्ण कलीसिया पर सार्वदेशिक बिशप नियुक्त कर दिया गया। नि:संदेह, यह सब एक ही दिन में नहीं हो गया, परन्तु इसे कई वर्ष लगे। और इस प्रकार लगभग 606 ई. सं. में पहला सार्वदेशिक बिशप कलीसिया के धर्म-त्यागी खंड का सिर (प्रधान), अथवा पोप बन गया, इस खंड को आज हम कैथलिक कलीसिया के नाम से जानते है। अब, प्रभु की कलीसिया का क्या हुआ? कुछ विश्वासी जन विश्वास में दृढ़ बने रहे, कदाचित संख्या में कम होने के कारण वे ध्यान रहित रहे, किन्तु प्रभु ने प्रतिज्ञा की थी कि उसका राज्य अर्थात् उसकी कलीसिया अन्त तक दृढ़ रहेगी, और ऐसा होना आवश्यक था।

जहां तक धर्म-संसार का संबंध था, कैथलिक कलीसिया का प्रभाव बढ़ गया। वस्तुत: इसने संसार पर इस प्रकार नियंत्रण किया कि बाद के कई सौ वर्षों को अंधकार का युग कहा जाने लगा। इसका मूल कारण यह था कि कैथलिक कलीसिया ने आम आदमी को बाइबल पढ़ने से रोक दिया, उसका कहना था कि केवल याजक लोग ही बाइबल को पढ़ने व समझने के योग्य है, और इसलिये केवल वे लोगों को ठीक से बता सकेंगे कि बाइबल क्या शिक्षा देती है। स्वभावत: इसका अभिप्राय यह हुआ कि उन्होंने लोगों को केवल वही बताया जो वे बताना चाहते थे।

इसी समय के बीच कैथलिक कलीसिया भी छिड़काव और वाद्यसंगीत जैसी

शिक्षाओं के आधार पर रोमी तथा यूनानी शाखाओं में विभाजित हो गई। समय के व्यतीत होने के साथ-साथ रोमन कैथलिक कलीसिया ने अपनी समिति इत्यादि के द्वारा अपनी प्रणाली में और बहुत से अन्य सिद्धान्त व अनेक शिक्षाएं जोड़ ली। अन्त में, 1500 ई. स. तक शिक्षा व नैतिक दृष्टिकोण से कैथलिक कलीसिया इतनी अधिक भ्रष्ट हो गई कि मार्टिन लूथर नाम के एक व्यक्ति ने, जो स्वयं कैथलिक कलीसिया का एक याजक था, कलीसिया का संशोधन करने का निश्चय किया। किन्तु उसका बहिष्कार कर दिया गया, और उसने कलीसिया को त्याग कर लोगों को वही शिक्षा देना व करना आरंभ कर दिया जिसे वह उचित समझता था। इसी के मध्य से संशोधन आन्दोलन अर्थात् प्रोटेस्टन्टइज़्म् का जन्म हुआ, व इस संशोधन आन्दोलन ने आधुनिक युग के सम्प्रदायों (डिनॉमिनेशन) को जन्म दिया। लूथर की गतिविधि की चर्चा शीघ्र ही संसार के अनेक भागों में फैल गई और लोग बाइबल की ओर वापस फिर आने का प्रयत्न करने लगे। किन्तु फिर भी पूर्ण रूप से सफल न हुए।

सत्रह व अठारह सौ ई. स. में यूरोप और अमेरिका में विभिन्न सम्प्रदायों के लोग अत्यधिक विभाजन तथा फूट के कारण खीझ उठे। परिणाम स्वरूप, वे लोग उन गलत शिक्षाओं को त्यागने लगे जिनको वे मानते थे और सम्पूर्णता से बाइबल का अनुकरण करने का प्रयत्न करने लगे। उनकी इच्छा एक नई कलीसिया को आरंभ करने की नहीं थी, परन्तु उस एक कलीसिया में वापस आने की थी जिसके विषय में वे परमेश्वर के वचन में पढ़ते थे। अत: वे इसमें सफल हुए, और उसी समय से सच्ची नए नियम की मसीहीयत का प्रचार समस्त संसार में किया जाने लगा, व लाखों लोग मनुष्यों की शिक्षाओं को त्याग कर यथार्थ में मसीही बनने लगे, और प्रभु की कलीसिया के सदस्य हो गए, ये लोग केवल बाइबल को ही अपना एकमात्र मार्गदर्शक व अगुआ स्वीकार करते थे। संसार के विभिन्न भागों में मसीही लोग सत्य का प्रचार करने के लिये गए, और उन्हें ज्ञात हुआ कि अफ्रीका, भारत, रूस, पौलैण्ड और अनेक अन्य स्थानों में कहीं-कहीं कलीसिया पहले से ही यथार्थ में विद्यमान है। कलीसिया, इसलिये आरंभ से लेकर आज तक वर्तमान है। इसकी कोई आवश्यकता नहीं कि इसके विषय में आरंभ से विचार किया जाए, यह सिद्ध करने के लिये कि यह बाइबल की एक सच्ची कलीसिया है। कलीसिया का आदर्श बाइबल में मिलता है और जब हम उसका अनुसरण करते हैं तो उसका परिणाम प्रभु की कलीसिया होता है। परमेश्वर का वचन बीज है (लूका 8:11) और आज भी वही उत्पन्न होगा जो प्रेरितों के दिनों में हुआ यानि मसीही तथा मसीह की कलीसिया के सदस्य। हम जानते है कि प्रभु का राज्य सदा बना रहेगा। इसलिये इसकी स्थापना के दिन से लेकर आज तक यह विद्यमान रहा है, और इसी प्रकार से यह सदा दृढ़ बना रहेगा, और कोई भी मनुष्य या शैतान इतना सामर्थी नहीं है कि इसको नाश कर सके। यह प्रभु का राज्य है, उसकी कलीसिया, यह आदि से अंत तक विजयी होकर अपने प्रभु के साथ सदा तक स्थिर रहेगी।

सही होने से भी बढ़कर
(रोमियों 14:1–15:13)
डेविड रोपर

हमने पहले ही देखा है कि रोमियों 14 के नियम लोगों को किसी भी समय असहमत होने पर सहायता कर सकते हैं। एवर्ट हाफर्ड विवाह में अकेले चलने वाले दम्पत्तियों से बात करते समय इसी वचन का इस्तेमाल करते हैं। इस अध्याय से बनाया जाने वाला उनका नियम यह है: ''यदि आप सही हैं तौ भी हार जाना कोई बात नहीं है।'' हम में से कइयों को यह बात अजीब लग सकती है हम *सही* होना चाहते हैं। अमेरिकी राजनेता हैनरी क्ले (1777–1852) यह कहने के प्रसिद्ध था, ''मैं राष्ट्रपति होने से सही होना बेहतर जानता हूं।'' सही *होने* से महत्वपूर्ण यह है कि हम अपने साथ असहमत होने वाले किसी भी व्यक्ति से *मनवाना* चाहते हैं कि हम सही हैं।

रोमियों 14 की पौलुस की चर्चा सदी की कलीसिया में मांस खाने के विवाद के गिर्द ही घूमती थी। उसने इस बात में कोई संदेह नहीं रहने दिया। कि इस मुद्दे पर कौन सही है। उसने कहा, कि जो व्यक्ति ''साग–पात ही खाता है'' वह ''निर्बल'' भाई है (14:2)। उसने कहा कि ''कोई वस्तु [कोई भी खाना, मांस सहित] अपने आप से अशुद्ध नहीं है'' (14:14) और इसे ''मजबूत'' स्थिति के रूप में पेश किया (देखें 15:1)। तौ भी पौलुस ने यह स्पष्ट कर दिया कि उस मुद्दे पर सही होने से अधिक आवश्यक बातें भी हैं।

सही होने से अधिक आवश्यक क्या हो सकता है? रोमियों 14:13–23 में पौलुस ने अधिक महत्व की कई बातें बताई। 13 से 18 आयतों में पौलुस ने जोर दिया कि विचार के मामलों में सही होने से आवश्यक *किसी भाई को हानि नहीं पहुंचाना* है (आयतें 13, 15)। इस पाठ में हम 19 से 23 आयतों का अध्ययन करेंगे। यह वचन साथी मसीही लोगों को हानि न पहुचाने की आवश्यकता को रेखांकित करता रहेगा, परन्तु एक अतिरिक्त विचार भी बताया जाएगा। कुछ न करके, या उसे अकेला छोड़कर, हम किसी भाई को हानि न पहुंचाने की पौलुस की बात को मान सकते हैं। इस पाठ के लिए वचन सकारात्मक जोर देने को शामिल करने अर्थात कुछ करने की आवश्कता से आगे ले जाता है। एक अर्थ में पौलुस ने कहा कि ''सही होने से बढ़कर *किसी भाई की सहायता करना* अधिक आवश्यक है'' (देखें आयत 19)। इन आयतों में आगे बढ़ते हुए हम कई विभिन्नताएं देखेंगे।

बनाना बनाम बिगाड़ना (रोमियों 14:19, 20क)

बनाना

हमारा वचन पाठ ''इसलिए'' शब्दों से आरम्भ होता है। ''इसलिए'' यूनानी शब्द वनद से लिया गया है, जिसका अनुवाद 13 और 16 आयतों में ''अत:'' किया गया है। अपने विचार को बढ़ाते हुए पौलुस ने जोर दिया कि हमारा लक्ष्य यह होना चाहिए: ''इसलिए हम

उन बातों का प्रयत्न करें, जिनसे मेल-विलाप और एक-दूसरे का सुधार हो'' (आयत 19)। ''प्रयत्न करें'' (कपवाव से) सक्रिय शब्द है। AB में है ''सो आओ फिर निश्चित रूप से लक्ष्य बनाएं और उत्सुकता से उसे पूरा करने के लिए काम करें। ...''

हमें उत्सुकता से क्या काम करना चाहिए? पहले तो, ''उन बातों में लगे रहें जिनसे मेल मिलाप हो।'' कुछ बातों से शत्रुता बढ़ती है और कुछ बातों से मेल बढ़ता है। अपनी मर्जी मनवाने पर जोर देन से झगड़ा बढ़ता है, जबकि दीन मन होना शान्ति को बढ़ावा देता है (देखें याकूब 3:17)। स्वार्थ का अत्यधिक ध्यान होना झगड़ा बढ़ाता है, जबकि दूसरों की चिन्ता करना मेल बढ़ाता है (देखें फिलिप्पियों 2:4)। बहस जीतने की कोशिश करना नाराजगी बढ़ाता है जबकि दूसरे व्यक्ति को समझने की कोशिश करना शान्ति बनाता है (देखें नीतिवचन 15:1)।

दूसरा, हमें ''एक-दूसरे का सुधार'' करने को कोशिश करनी है। ''सुधार'' शब्द यूनानी के oikodome से लिया गया है। इस शब्द का मूल अर्थ ''या'' कोई और सुधार है'' (oikos [''घर''] के साथ demo [''बनाना'']। नये नियम में इस शब्द का इस्तेमाल सांकेतिक रूप में दूसरों को आत्मिक रूप से बनाने और मजबूत करने के लिए किया गया है। कलीसिया को इसकी आश्यकता कैसे हैं! कहीं और पौलुस ने कहा है, ''सब कुछ आत्मिक उन्नति के लिए होना चाहिए'' (1 कुरिन्थियों 14:26; देखें 1 कुरिन्थियों 8:1)।

''एक-दूसरे का सुधार ''में'' एक-दूसरे'' वाक्यांश को नजर अन्दाज न करें। जिस बात का पौलुस प्रस्ताव रख रहा था, उससे ''निर्बल'' भाई और ''बलवान'' भाई *दोनों* को सहायता मिलनी थी। ज्ञान में बढ़ने पर ''निर्बल'' भाई का पालन-पोषण और रक्षा होनी आश्वयक थी। परन्तु ''बलवान'' भाई को भी बढ़ने की आवश्यकता थी; उसे प्रेम में बढ़ने की आवश्कता थी।

एक प्रसिद्ध प्रचारक जिम्मी एलन रोमियों 14:19 के ''पूरे भाग की मुख्य आयत'' मानते है। 14:13-18 के अपने अध्ययन में मैंने कई प्रश्न शामिल किए हैं, जो दूसरे मसीही लोगों के साथ अपने सम्बन्ध के बारे में अपने आप से पूछने चाहिए। इस सूची में दो प्रश्न ये हैं: ''क्या मेरे कामों से मेरे भाई का सुधार होगा?'' और ''क्या उनसे कलीसिया का सुधार होगा?'' (देखें इफिसियों 4:12ख)।

बिगाड़ना

बनाना का विपरीत शब्द बिगाड़ना है। आयत 20 में पौलुस ने सुधार के अपने रूपक को जारी रखा: ''भोजन के लिए परमेश्वर का काम न बिगाड़'' (आयत 20क)। ''बिगाड़'' का अनुवाद kataluo से किया गया है, जिसमें kata से गहरा हो जाने वाला शब्द luo (''खोलना, घोलना, तोड़ना, नष्ट करना'') है। यूनानी शब्द kataluo का अर्थ ''पूरी तरह नष्ट करना, बिल्कुल बर्बाद करना'' है।

हमें क्या नहीं बिगाड़ना चाहिए? ''परमेश्वर के काम को।'' इस वाक्यांश में वह सब हो सकता है, जो परमेश्वर ने मनुष्य जाति के उद्धार के लिए किया है। संदर्भ में

इसका हवाला उस काम के परिणाम के अन्त तक अर्थात मसीह में भाइयों और बहनों के लिए है। पौलुस के शब्द यह दिखाने के लिए बनाए गए थे कि विचार के मामलों पर झगड़ना कितना बेतुका और त्रासदीपूर्ण है। जे. बी. फिलिप्स ने आयत 20 के पहले भाग को इस प्रकार लिखा है: ''निश्चिय ही हमें मांस की एक प्लेट के लिए परमेश्वर के काम को बिगाड़ने की इच्छा नहीं करनी चाहिए।''

यह ताड़ना पढ़ते हुए कि ''भोजन के लिए परमश्वर के काम को न बिगाड़'' मुझे कुछ लोगों का ध्यान आता है। जिन्होंने पहली सदी के मांस खाने के मुद्दे की तरह विचार की भिन्नताओं, दिल दुखाने, काल्पनिक उपेक्षाओं और ऐसे छोटे-छोटे महत्वहीन मामलों को ''मुद्दे'' बना कर मण्डलियों को बिगाड़ दिया। कितना दुखद है!

बनाने के बजाय बिगाड़ना हमेशा आसान रहा है। किसी बच्चे को हथौड़ा देकर उसे कहा जाए कि इस घर को तोड़ दे तो वह मिनटों में बहुत-सा नुकसान कर सकता है। और फिर उसे हथौड़ा देकर कहो कि वह इस घर को बना दे, तो वह चाहे जितना समय लगाए उसे बना नहीं सकता। कलीसिया में बहुत से लोग ऐसे हैं, जिनका काम एकमात्र लोगों की गलतियां निकालना और काम को बिगाड़ना होता है। परमेश्वर की सहायता से बनाने वाले बनने का निश्चय करें। कलीसिया में फूट न डालें।

भलाई करना बनाम बुराई करना (14:20ख, ग, 21)

भजन लिखने वाले ने लिखा है: ''बुराई को छोड़ और भलाई कर'' (भजन संहिता 34:14क; देखें 2 पतरस 3:11)। हमारे वचन पाठ के अगले भाग में पौलुस ने किसी भाई को दुखी न करने के महत्व पर ''भलाई'' और ''बुराई'' शब्दों पर जोर दिया।

वह जो बुरा है

14:14 में पौलुस ने कहा कि ''कोई वस्तु अपने आप से अशुद्ध नहीं।'' यहां उसने वैसा ही दावा किया: ''सब कुछ शुद्ध [katharos] तो है'' (आयत 20क)। पिछले वाक्य की तरह इसमें भी कोई खूबी होनी थी। पहले पौलुस ने ''अशुद्धता'' (akathartos, ''गंदगी'') (1:24; 6:19) की बात की थी, सो वह नहीं मानता था कि कोई भी चीज और हर चीज ''शुद्ध'' है। इस चर्चा में विशेष रूप से उसके मन में मांस की बात थी कि अपने आप में हर प्रकार का मांस ''वास्तव में शुद्ध है।'' (NIV में ''हर भोजन शुद्ध'' है।)

''परन्तु'' पौलुस ने आगे कहा, ''उस [विभिन्न प्रकार के मांस] मनुष्य के लिए बुरा है [kakos], जिस को उसके भोजन करने से ठोकर लगती है'' (14:20ग)। मूल धर्म शास्त्र में इस ''मनुष्य'' की पहचान अस्पष्ट है। मुलतया यूनानी शब्द का अर्थ ''ठोकर लगने के द्वारा खाने वाला आदमी'' है। यह शब्दावली किसी ''निर्बल'' भाई के विषय में हो सकती है, जिसका विवेक मांस खाने से ठोकर खाता है (देखें आयत 23)। अगली आयत के प्रकाश में ये शब्द सम्भवतया ''बलवान'' भाई के लिए हैं, जो ''निर्बल'' भाई के सामने मांस खाता है और उसके विवेक को भंग करने के लिए उसे प्रोत्साहित करता है। ह्यूगो मेकोर्ड के अनुवाद में है ''वह व्यक्ति जो वह चीज खाता है,

जिससे किसी को ठोकर लगती है।''

वह जो भला है

यदि वह ''बुरा'' है तो ''भला'' क्या है? पौलुस ने इस प्रश्न का उत्तर दिया: ''भला तो यह है, कि तू न मांस खाए और न दाख रस पीए, न और कुछ ऐसा करे, जिस से तेरा भाई ठोकर खाए'' (आयत 21)।

आयत 17 में पौलुस ने कहा कि ''परमेश्वर का राज्य खाना *पीना* नहीं, ''जिसमें उसने इस चर्चा में ''दाखरस'' पीने की बात जोड़ी। इसे जोड़ने की पौलुस ने कोई व्याख्या नहीं दी, इसलिए हम पक्का नहीं कह सकते कि उसके मन में क्या था। शायद यह केवल इसलिए जोड़ा गया कि खाना और पीना भोजन के तत्व हैं। पौलुस कह रहा होगा, ''अपने भाई को हानि पहुंचाने के बजाय मैं उपवास रखना पसन्द करुंगा!'' यदि प्रेरित ने यह चाहा होता कि ''दाख रस'' शब्द को महत्व दिया जाए, तो शायद यह इसलिए था क्योंकि दाखरस किसी न किसी तरह मूर्तियों की पूजा से जुड़ा था। पुराने नियम में दानिय्येल ने राजा की मेज से दाखरस और भोजन दोनों लेने से इनकार कर दिया था (दानिय्येल 1:8)। शायद उसने ऐसा इसलिए किया क्योंकि भोजन, अर्थात खाना और पीना बाबुल के देवताओं को अर्पित किया गया (भोजन के लिए परमेश्वर को हमारे धन्यवाद देने की तरह, मूर्तियों को लगाया गया भोग) था।

परन्तु हमें इस बात पर ध्यान रखना चाहिए कि हम अतिरिक्त मुद्दे में फंसकर कहीं पौलुस की मुख्य बात के प्रति बेपरबाह न हो जाएं। उसने कहा, ''भला तो यह है, कि तू न ... कुछ ऐसा करे, जिससे तेरा भाई ठोकर खिलाए, तो मैं कभी किसी रीति से मांस न खाऊंगा, न हो कि मैं अपने भाई के लिए ठोकर का कारण बनूं।'' कुछ लोगों को यह वाक्य अति लगता है। वे आपत्ति करते हैं कि उन्हें यह या वह करने का ''अधिकार है।'' एक अर्थ में पौलुस ने सिखाया, ''अपने भाई की सहायता करने के लिए अपने अधिकार को त्यागना आपका अधिकार है।''

नई वाचा की व्यावहारिक प्रासंगिकता

जैरी बेट्स

हमने देखा है कि पुरानी वाचा या पुराने नियम को हटा दिया गया है और अब हम नई वाचा या नए नियम के अधिकार के अधीन हैं। इसका हमारे जीवनों पर क्या प्रभाव पड़ता है? कुछ धार्मिक विचार जो आम तौर पर दिखाए और माने जाते हैं वे केवल पुराने नियम में बताए गए हैं और नये नियम में उनका कोई आधार नहीं है। इन आम व्यवहारों में से कुछ को संक्षेप से देखते हैं कि वे क्या हैं?

सब्त के दिन को मनाना

कुछ धार्मिक गुटों जैसे **सैवंथ डे अडवेंटिस्ट चर्च** का मानना है कि चौथी आज्ञा

आज भी प्रभावी है। निर्गमन 20:8-11 में हम पढ़ते हैं, ''तू विश्रामदिन को पवित्र मानने के लिये स्मरण रख छः दिन तो तू परिश्रम करके अपना सब काम काज करना; परन्तु सातवां दिन तेरे परमेश्वर यहोवा के लिये विश्रामदिन है। उस में न तो तू किसी भांति का काम काज करना, और न तेरा बेटा, न तेरी बेटी, ने तेरा दास, न तेरी दासी, न तेरे पशु, न कोई परदेशी जो तेरे फाटकों के भीतर हो। क्योंकि छः दिन में यहोवा ने आकाश, और पृथ्वी, और समुद्र, और जो कुछ उन में है, सब को बनाया, और सातवें दिन विश्राम किया; इस कारण यहोवा ने विश्रामदिन को आशीष दी और उसको पवित्र ठहराया। ''परमेश्वर ने सातवें दिन आराम किया और सब्त के दिन सृष्टि की रचना के स्मरण के रूप में ठहराया, इसलिए यह तर्क दिया जाता है कि हमें आज सब्त के दिन को मनाना और इसे पवित्र मानना चाहिए।

सब्त के दिन की आज्ञा पत्थर पर लिखी उन आज्ञाओं में से एक थी और पौलुस ने साफ लिखा कि इस व्यवस्था को हटा दिया गया। ''और यदि मृत्यु की वह वाचा जिस के अक्षर पत्थरों पर खोदे गए थे, यहां तक तेजोमय हुई, कि मुंह पर के तेज के कारण जो घटना हो जाती थी, इस्त्राएली उसके मुंह पर दृष्टि नहीं कर सकते थे। तो आत्मा की वाचा और भी तेजोमय क्यों न होगी? क्योंकि जब वह जो घटता जाता था तेजोमय था, तो वह जो स्थिर रहेगा, और भी तेजोमय क्यों न होगा?'' (2 कुरिन्थियों 3:7, 8, 11)। इस कारण सब्त का अधिकतर खत्म हो गया है। सब्त के दिन को मनाने की आज्ञा सीनै पहाड़ पर दी गई आज्ञाओं से पहले नहीं दी गई थी, और तब तक कोई इसे नहीं मनाता था। ''फिर तू ने सीनै पर्वत पर उतरकर आकाश में से उनके साथ बातें की, और उनको सीधे नियम, सच्ची व्यवस्था, और अच्छी विधियां, और आज्ञाएं दीं। और उन्हें अपने पवित्र विश्राम दिन का ज्ञान दिया, और अपने दास मूसा के द्वारा आज्ञाएं और विधियां और व्यवस्था दीं'' (नहेम्याह 9:13-14)। ध्यान दें कि नहेम्याह ने कहा कि सब्त के दिन का नियम इस्त्राएलियों को केवल सीनै पहाड़ पर मूसा से ही पता चला था। यदि किसी को पता ही न हो कि कोई नियम है तो उसे मान नहीं सकता है। इसके अलावा आरम्भिक मसीही लेखों से हमें पता चलता है कि कलीसिया आरम्भ से ही सप्ताह के पहले दिन इकट्ठा होती और आराधना करती रही है।

वाद्य संगीत

अधिकतर धार्मिक गुट परमेश्वर की आराधना करते हुए साजों या वाद्य यंत्र का इस्तेमाल करते हैं। नये नियम में आराधना में साजों के इस्तेमाल का कोई अधिकार नहीं देता है। बल्कि हमें केवल गाने की आज्ञा ही मिलती है। बेशक यह सच है कि पुराने नियम में साजों के इस्तेमाल की आज्ञा है पर जो कुछ आज हम पढ़ते हैं उसके अधिकार के लिए पुराने नियम का इस्तेमाल नहीं किया जा सकता। वाद्य यंत्र या साज, जैसे तुरही या वीणा के स्वर्ग में होने की बात प्रकाशितवाक्य में लिखी गई है पर उनके परमेश्वर की आराधना में इस्तेमाल की कोई बात नहीं है। इसके अलावा प्रकाशितवाक्य प्रतीकों और संकेतों की भाषा की पुस्तक है। स्वर्ग भी शारीरिक नहीं बल्कि आत्मिक है, तो फिर आत्मिक जगह में शारीरिक यन्त्र क्यों होंगे? धर्म को देने के लिए हमारा अधिकार नया नियम है और

नये नियम की किसी पुस्तक में साजों यानी वाद्य यंत्रों का कोई उल्लेख नहीं है। इसके अलावा आरम्भिक कलीसिया आराधना में साजों का इस्तेमाल नहीं करती थी।

दशमांश

बहुत से धार्मिक संगठन अपने लोगों को दशमांश देने की आज्ञा देते हैं। दशमांश यानी आमदनी का दसवां भाग, देने की आज्ञा पुराने नियम में है, ''फिर भुमि की उपज का सारा दशमांश, चाहे वह भूमि का बीज हो चाहे वृक्ष का फल, वह यहोवा ही का है; वह यहोवा के लिये पवित्र ठहरे'' (लैव्यव्यवस्था 27:30)। इस्त्राएली लोग दशमांश वैसे नहीं देते थे जैसे उन्हें देना चाहिए, तौभी उन्हें इसकी आज्ञा दी गई थी। असल में यदि इस्त्राएली वैसे देते जैसे उन्हें देना चाहिए था तो यह दसवें भाग से अधिक बनता था।

पुराने नियम के तरीके के कारण कई संगठनों का मानना है कि हमें भी दशमांश देने की आज्ञा है। हमें आज्ञा तो है पर दशमांश देने की आज्ञा नहीं है। ''सप्ताह के पहिले दिन तुम में से हर एक आमदनी के अनुसार कुछ अपने पास रख छोड़ा करे, कि मेरे आने पर चन्दा न करना पड़े'' (1 कुरिन्थियों 16:2)। यहां हमें देने की आज्ञा मिलती है पर पौलुस आमदनी के अनुसार देने को कहता है, कितना देना यह स्पष्ट नहीं किया गया। पर इसका अर्थ यह नहीं है कि हम बहुत कम दे सकते हैं। यदि उस वाचा के अधीन जो नई वाचा से कम थी रहने वाले थे दशमांश देने की आज्ञा दी गई थी तो बेशक हम सब इस बात पर सहमत हो सकते हैं कि हमें उससे कहीं अधिक श्रेष्ठ वाचा के अधीन कम से कम इतना तो देना ही चाहिए। इस कारण बेशक हमें दशमांस देने की आज्ञा नहीं है पर हमारे दशमांश देने का यह आरम्भ होना चाहिए न कि अंत। पौलुस ने मसीही लोगों को कुड़कुड़ कर या दबाव से नहीं बल्कि हर्ष से देने को कहा है (2 कुरिन्थियों 9:7)। जब कोई बताता है कि उसे कितना देना चाहिए तो वह देने की खुशी और स्वेच्छा को आसानी से निकाल सकता है, जिसके बिना किसी को आशीष नहीं मिल सकती।

परमेश्वर से सीधे प्रार्थना करें

पुरानी वाचा के तहत लोगों को आराधना में परमेश्वर के पास जाने के लिए याजक के पास से होकर जाना पड़ता था। लोग जानवरों के बलिदान चढ़ाते थे पर असल में बलिदानों को भेंट याजक करते थे। याजक ही आराधना में धूप जलाते थे। यूं कहें कि याजक मनुष्य और परमेश्वर के बीच खड़े होते हैं।

दूसरी ओर नई वाचा के तहत मनुष्य सीधे परमेश्वर तक पहुंच कर सकता है। आज कोई याजक नहीं हैं जिसके द्वारा परमेश्वर तक हम पहुंच करें क्योंकि हम सब याजक हैं, याजकों का पवित्र समाज जो आत्मिक बलिदान चढ़ाता है (1 पतरस 2:5)। हम जानवरों के बलिदान नहीं चढ़ाते पर हम बलिदान चढ़ाते हैं और हमारे बलिदान अपने शरीरों के जीवित बलिदान होते हैं। ''इसलिये हे भाइयो, मैं तुम से परमेश्वर की दया स्मरण दिला कर विनती करता हूं कि अपने शरीरों को जीवित, और पवित्र, और परमेश्वर को भावता हुआ बलिदान करके चढ़ाओ। यही तुम्हारी आत्मिक सेवा है'' (रोमियों 12:1)। ''इसलिए हम उसके द्वारा स्तुति रूपी बलिदान अर्थात उन होठों का फल जो उसके नाम का अंगीकार करते हैं, परमेश्वर के लिए सर्वदा चढ़ाया करें'' (इब्रानियों

13:15)। एक बार फिर हम देखते हैं कि हम बलिदान भेंट करते हैं पर वे बलिदान हमारे अपने हैं। पुराने नियम के याजकों को परमेश्वर ने धूप चढ़ाने की आज्ञा दी थी (निर्गमन 30:8)। आज हम धूप तो चढ़ाते हैं पर वह धूप जिसे हम चढ़ाते हैं वे हमारी प्रार्थनाएं हैं ''और जब उसने पुस्तक ले ली, तो वे चारों प्राणी और चौबीसों प्राचीन उस मेमने के सामने गिर पड़े; और हर एक के हाथ में वीणा और धूप से भरे हुए सोने के कटोरे थे, ये तो पवित्र लोगों की प्रार्थनाएं हैं'' (प्रकाशितवाक्य 5:8)। ध्यान दें कि इस तथ्य के अलावा कि हर मसीही को परमेश्वर तक सीधे पहुंच करने की छूट है, परमेश्वर को हमारी आराधना और सेवा के आत्मिक पहलू पर जोर दिया गया है।

खतना

शारीरिक खतना पुराने नियम का चिन्ह था। परमेश्वर के साथ अपनी वाचा के सम्बन्ध के चिन्ह के रूप हर यहूदी नर के शरीर का खतना किया जाता था। मसीही लोगों का भी खतना होता है पर यह खतना आत्मिक यानी हृदय का खतना है। ''उसी में तुम्हारा ऐसा खतना हुआ है, जो हाथ से नहीं होता, अर्थात मसीह का खतना, जिस से शारीरिक देह उतार दी जाती है'' (कुलुस्सियों 2:11)। ध्यान दें कि पौलुस इस खतने को पुरानी वाचा के अधीन हाथों के किए जाने वाले शारीरिक खतने के उलट बिना हाथ लगाए किए जाने वाले आत्मिक खतने से मिलाता है। आत्मिक खतने को शरीर के पापों को उतारने के साथ मिलाया गया है। ''पर यहूदी वही है जो मन में है; और खतना वही है जो हृदय का और आत्मा में है, न कि लेख का: ऐसे की प्रशंसा मनुष्यों की ओर से नहीं, परन्तु परमेश्वर की ओर से होती है'' (रोमियों 2:29)। फिर गलातियों 5:6 में पौलुस ने लिखा,'' और मसीह यीशु में न खतना, न खतनारहित कुछ काम का है, परन्तु केवल, जो प्रेम के द्वारा प्रभाव करता है।''

कुछ लोग वाचा के चिन्ह के रूप में बपतिस्मे को जोड़ना चाहते हैं पर पौलुस ने ऐसा नहीं कहा। कुलुस्सियों 2:12 में उसने आगे कहा, ''और उसी के साथ बपतिस्मा में गाड़े गए, और उसी में परमेश्वर की शक्ति पर विश्वास करके, जिस ने उस को मरे हुओं में से जिलाया, उसके साथ जी भी उठे।'' आत्मिक खतना तब होता है जब हम पानी में गाड़े जाते हैं। इस कारण बपतिस्मा खतना नहीं हैं बल्कि यह वह समय होता है जब परमेश्वर हमारे पापों को क्षमा करने के द्वारा आत्मिक रूप में हमारा खतना करता है। बपतिस्से को नई वाचा के चिन्ह या मोहर के रूप में कहीं नहीं बताया गया। इसके बजाय पवित्र आत्मा हमारी मोहर है (इफिसियों 4:30)।

सारांश

हमने कई धार्मिक व्यवहारों को संक्षेप में देखा जिन्हें आज माना जाता है पर बाइबल उन्हें अधिकार नहीं देती हैं बहुत हद तक यह इस तथ्य के कारण है कि लोग वाचाओं के अंतर को नहीं समझते। हमने कुछ और बातें भी देखी हैं जिन्हें हम करते नहीं हैं जो पुरानी वाचा में की जाती थी और मुझे यकीन है कि आज कुछ और अंतरों पर भी विचार कर सकते हैं। परमेश्वर की सेवा में हम जो कुछ भी करते हैं उसके लिए यह पूछा जाना आवश्यक है कि हम किस अधिकार से करते हैं; परन्तु वह अधिकार नई वाचा यानी नये

नियम में ही मिलता है। उम्मीद है कि इस अध्ययन से आपको वाचाओं में अंतर करने की बहुत समझ मिली होगी जिससे आप परमेश्वर के वचन को ठीक रीति से काम में ला सकें (2 तीमुथियुस 2:15)।

अपने बच्चों के लिए मेरा सबसे बड़ा उपहार

बॉब पलंकेट

अपने बच्चों को सुरक्षित महसूस करवाने के लिए मैंने कठिन परिश्रम किया। रोटी, कपड़ा और मकान देकर मैंने उन्हें सुरक्षित महसूस करवाना चाहा। मैंने उन्हें अच्छी शिक्षा देनी चाही। इन सब से बढ़कर मैंने उन्हें एक अच्छा नाम देना चाहा, जिसके लिए बुद्धिमान ने कहा है कि वह सोने और चांदी से भी मूल्यवान है। इससे भी बढ़कर शायद अपने बच्चों को समय देना और उन से प्रेम करना था। और इससे भी बढ़कर उन्हें अच्छा नमूना देना था ताकि मेरे कदमों पर चलकर वे सही मार्ग पर चलें। इस से भी बढ़कर उन्हें अद्‌भूत स्वर्गीय पिता को दिखाना था जिसके साथ वे मेरे बाद बातें करते हुए चल सकें। मुझे पता है कि मैंने ये सारे काम बहुत अच्छी तरह से नहीं किए हैं, परन्तु फिर भी, मैंने कोशिश की।

परन्तु उनके लिए मेरा सबसे बड़ा तोहफा इन सब चीजों से बढ़कर था। यह तोहफा एक मसीही मां देने का था। मैं बंता नहीं सकता कि उसके साथ डेट करने के समय मेरी सबसे बड़ी प्राथमिकता यही थी, परन्तु इसके लिए मैं अपनी प्यारी मां का भी कर्जदार हूं जिसने मुझ में उस माहौल में रखा जहां मसीही लड़कियां बहुत थीं। मुझे वहां के बाइबल कॉलेज में शिक्षा मिली। अत्यधिक सुन्दर होने के साथ-साथ उसमें दयालुता, विनम्रता, धीरज, उदारता और नि:स्वार्थपन की खूबियां थीं। वह 1 कुरिन्थियों 13:4-8 को आगे बढ़ाती है।

उसके बच्चे और नाती-पोते उसकी प्रशंसा यह कहते हुए करते हैं कि वह हर समय उनके लिए उपस्थित रहती है, हर समय उनकी बात को सुनती है, पांचों को यह अहसास दिलाती है कि वे कितने महत्वपूर्ण हैं। वह काम करती थी जिससे मुझे कॉलेज जाने में सहायता मिलती थी। तब मैंने यह वादा किया था कि यदि हम उस चुनौती को पार कर लें तो उसे दोबारा काम करने के लिए घर से बाहर नहीं जाना पड़ेगा, और वह नहीं गई। हमारे पास इतने संसाधन नहीं थे, परन्तु हमारे बच्चों को घर में मां मिलती थी।

आज मेरा यह मानना है कि बच्चों को कारों या कपड़ों या अन्य चीजों की सचमुच में इतनी आवश्यकता नहीं है। मेरा यह मानना है कि बच्चे एक दूसरे से प्रेम करने वाले और प्रभु से प्रेम करने वाले और अपने बच्चों को अपना प्रेम और समय देने वाले अच्छे मसीही पिता-माता के बदले में, उन चीजों को त्याग देंगे। कलीसिया तब तक वैसी नहीं हो सकती जैसी परमेश्वर चाहता है कि वह हो, जब तक घर वैसा नहीं है जैसा परमेश्वर चाहता हे कि वह हो। मैं आज कलीसिया से प्रेम करने वाले, और समर्पित माता-पिता

वाले बहुत से मसीही परिवारों के लिए परमेश्वर को धन्यवाद देता हूं।

नवयुवकों और नवयुवतियां, याद रखो कि जब आप अपने जीवन-साथी का चयन कर रहे होते हो तो आप अपने बच्चों के लिए माता या पिता भी चुन रहे होते हो।

मैं अपने बच्चों से और उन सभी बच्चों से जिन्हें मसीही मां मिली है, कहना चाहता हूं कि तुम इतने आशीषित हो कि *''उठकर उसको धन्य कहो''* (नीतिवचन 28:38)।

फर्ज के कारण हम चीजें अच्छी तरह से करते हैं परन्तु प्रेम के कारण हम उन्हें खूबसूरती से करते हैं

कोई तलाक सस्ता नहीं होता

बॉबी डॉकरी

किसी महानगर के समाचार पत्र में एक वकील ने विज्ञापन दिया: ''आसानी से तलाक: कोई परेशानी नहीं केवल रूपये 10,000 में।''

आज के समाज में ऐसे विज्ञापन आम तौर पर तीखी टिप्पणी का कारण बनते हैं। टूटे हुए वादों के ऐसे माहौल में लोगों के लिए यह समझना आवश्यक है कि तलाक रूपये 10,000 से भी कहीं बढ़कर महंगा है। तलाक का कोई भी स्तर नहीं होता। तलाक की कीमत क्लेश, कड़वाहट, दु:ख और पछतावे के रूप में ही चुकाई जाती है। आइए तलाक की कुछ अतिरिक्त कीमतों पर विचार करते हैं।

1. आत्मिक कीमत: तलाक परमेश्वर की इच्छा का उल्लंघन है। मलाकी 2:16 में परमेश्वर बिना शर्त कहता है: *''मैं स्त्री त्याग [यानी तलाक] से घृणा करता हूं।''* यीशु ने बताया *''कि जो कोई व्यभिचार को छोड़ और किसी कारण से अपनी पत्नी को त्यागकर [यानी तलाक देकर] दूसरी से विवाह करे, वह व्यभिचार करता है: और जो छोड़ी हुई को विवाह करे, वह भी व्यभिचार करता है''* (मत्ती 19:9)। विवाह के लिए परमेश्वर की योजना में तलाक न तो है, और न कभी था।

2. भावनात्मक कीमत: दिसम्बर 31, 1984 के *यूएसए टुडे* के अंक में ''तलाक मिलने के बाद, कठिन, अकेलापन'' शीर्षक से तलाक के परिणामों पर एक विशेष रिपोर्ट छपी। जिनके साथ बीती है वे इससे सहमत होंगे कि तलाक भावनात्मक वेदना, दिल तोड़ देने वाला और दु:ख भरा अनुभव है। यूनिवर्सिटी ऑफ वर्जीनिया के डॉक्टर मेविस हेदिंग्टन के द्वारा किए गए अध्ययन में पाया गया कि तलाक के बारह महीने बाद, 73 प्रतिशत महिलाओं तथा 60 प्रतिशत पुरूषों को लगा कि तलाक गलत था। डॉक्टर ली ने तलाक के भावनात्मक विनाश को इन शब्दों को संक्षिप्त किया है: ''तलाक का सदमा मृत्यु के जैसा ही है।''

3. सामाजिक कीमत: तलाक के बाद अधिकतर पुरूष तथा महिलाएं पुराने मित्रों से, और यहां तक कि रिश्तेदारों से भी कटा सा महसूस करते हैं। पुराने सामाजिक

सम्बन्धों से पीछे हटने लगते हैं। पुराने रिश्ते बेकार लगने लगते हैं। तलाक के बाद आम तौर पर बेचैनी, और अकेलापन लगने लगता है।

4. बच्चों को कीमत चुकानी पड़ती है: तलाक का सदमा पति पत्नी से आगे बढ़कर बच्चों के जीवनों को भी प्रभावित करता है। मनोचिकित्सक डॉक्टर ने बच्चों पर तलाक के दस वर्ष के अध्ययन से यह निष्कर्ष निकाला: कि ''तलाक से बच्चे इतना सदमे में आ सकते हैं जिससे बड़े होते होते वे पिछली घटनाओं के भावनात्मक बंधक में हों, जिनका जीवन मनोवैज्ञानिक रूप में सुखद न रह पाए।'' चौदह राज्यों के 18,000 स्कूली बच्चों पर एक और अध्ययन से पता चला कि तलाक के कारण बिखरे हुए परिवारों के बच्चे को आम तौर पर उन घरों के बच्चों की अपेक्षा, जिनमें तलाक न हुआ हो, स्कूल में कहीं अधिक'' कठिनाई होती है (*टाईम,* जनवरी 4, 1982, पेज 81)। न्यूजवीक की एक कवर स्टोरी में ''सांत्वना देने वाले बड़े व्यक्ति को लगा कि बच्चे खुद को इतना ढाल लेते हैं कि वे तलाक का सामना करके उसमें से निकल सकते हैं'' प्रमाण के विपरीत (फरवरी 11, 1980)।

तलाक कभी भी सस्ता या आसान नहीं होता। खालीपन और रह गए दागों के रूप में इसकी कीमत चुकाई जाती है। और इसमें उनके लिए जिनका तलाक उन्हें परमेश्वर से दूर और उसकी इच्छा से बाहर कर देता है, न्याय के समय चुकाई जाने वाली कीमत शामिल नहीं है। कोई तलाक सस्ता नहीं होता!

नियंत्रण से बाहर

डेल ग्रिस्म

आज के समय में परिवार बड़े मुश्किल दौर से गुज़र रहे हैं। तलाक के कारण बहुत से परिवार टूट गए हैं। तलाक से पति और पत्नी दोनों को भावनात्मक कष्ट होता है। परन्तु सबसे अधिक कष्ट बच्चों को सहना पड़ता है। उनकी दुनिया पलट जाती है। वे अपनी मां और अपने पिता दोनों से प्यार करते हैं और उन्हें समझ में नहीं आता कि झगड़ा करने और अलग होने के बजाय वे मिलकर क्यों नहीं रहते। बहुत से बच्चों का पालन-पोषण या तो अकेली मां करती है या अकेला पिता।

उन परिवारों में भी, जहां माता-पिता एक छत के नीचे रहते हैं, बच्चे कई बार उनके अधिकार को चुनौती दे देते हैं। कई बार तो वे घर छोड़कर चले जाते हैं या किसी मित्र या रिश्तेदार के पास या सड़क के किनारे रहने लगते हैं। हजारों बार ऐसा होता है। कि बहुत से माता-पिता ने अपने बच्चों का नियंत्रण खो दिया है।

अधिक साल पुरानी बात नहीं है जब माता-पिता अपने बच्चों को आज्ञा मानना सिखाते थे। यदि वे उनकी बात न मानते तो उन्हें दण्ड दिया जाता था। फिर कथित ''विशेषज्ञ'' माता-पिता को यह बताने के लिए किताबें लिखने लगे कि बच्चों को डांटना नहीं चाहिए। इन विशेषज्ञों का दावा था कि यदि बच्चों से वे काम करवाए जाएं जो उन्हें

करना नपसंद हो तो इससे उनके मनों पर बुरा असर होगा। बहुत से माता-पिता ने यह मान लिया कि कि विशेषज्ञों को उनसे अधिक पता है कि बच्चों का पालन-पोषण कैसे किया जाए, और उन्होंने इसके लिए जिम्मेदारी आवश्यक नहीं समझा। बच्चे तेवर दिखाने लगे और अब उन्हें किसी व्यक्ति या वस्तु का कोई लिहाज नहीं है।

बहुत से बच्चे अपनी मां या पिता या दोनों को डराना सीख लेते हैं। ऐसा वे कई बार उनसे प्रेम न करके उन्हें डराकर करते हैं। बच्चों की सचमुच में चांदी है और वे अपने माता-पिता को बताते हैं कि वे क्या करेंगे और क्या नहीं। यदि उन्हें कोई चीज चाहिए हो तो वे चाहते हैं कि माता-पिता उनकी मांग पूरी करें और तुरंत करें।

परिवार की हालत बहुत मामलों में नियन्त्रण से बाहर है! नशे, शराब और व्यभिचार बहुत से लोगों के जीने का ढंग बन चुका है। यदि हम चाहते हैं कि हमारे परिवार और हमारा देश बचाया जाए, तो हमें बाइबल की ओर मुड़कर गम्भीरतापूर्वक उसमें दिए गए निर्देशों को मानना पड़ेगा।

आप कितने बुद्धिमान हो?

डैन जैंकिंस

सुलैमान का नाम सदा के लिए बुद्धि के साथ जुड़ गया है। जवान राजा के रूप में उसने परमेश्वर से बुद्धि मांगी और परमेश्वर ने उसे बुद्धि दे दी। सुलैमान के लेखों का अधिकतर विषय-वस्तु बुद्धि के विषय पर ही केन्द्रित है। नीतिवचन 11:30 के इन शब्दों पर ध्यान दें: *''धर्मी का प्रतिफल जीवन का वृक्ष होता है, और बुद्धिमान मनुष्य लोगों के मन को मोह लेता है।''*

यीशु ने अनपढ़ मछेरों को बुद्धिमान लोग बना दिया। यहूदी लोग पतरस और यूहन्ना को अनपढ़ और *''साधारण मनुष्य'' समझते थे* (प्रेरितों 4:13)। फिर भी यीशु ने उन में इससे कहीं बढ़कर देखा।

इस बुद्धि को पाने के लिए बड़ी कीमत चुकानी आवश्यक है। परमेश्वर के वचन का ज्ञान पाने के लिए घण्टों समर्पित होकर बाइबल का अध्ययन करने के लिए इसके लिए समय का बलिदान करना पड़ता है। इसके लिए दूसरों की सहायता करने वाले बनने के लिए अपनी इच्छा का त्याग करना आवश्यक है।

पौलुस कहता है, *''क्योंकि सब से स्वतंत्र होने पर भी मैं ने अपने आप को सब का दास बना दिया है; कि अधिक लोगों को खींच लाऊं। ... मैं सब मनुष्यों के लिये सब कुछ बना कि किसी न किसी रीति से कई एक का उद्धार कराऊं''* (1 कुरिन्थियों 9:19-22)। एक यहूदी के रूप में अन्यजातियों को जीतने के लिए उसके लिए जातीय मतभेद की रूकावट को लांघना आवश्यक है। फिर भी उसने उन तक पहुंचने के लिए आवश्यक बलिदान किए। यहूदियों के बीच परिश्रम करते समय उनके बीच में से भी उसके प्रति नाराजगी थी क्योंकि उसने उनके धर्म को छोड़ दिया था फिर भी उसने जो बलिदान करने आवश्यक थे, किए। हम पौलुस के शब्दों को कम न समझें कि बुद्धि पाने

की सही कीमत है, *''मैंने अपने आपको सब का दास बना दिया है।''*

अंत में आत्माओं को जीतने वालों के लिए अनन्त प्रतिफल मिलेगा। दानिय्येल ने कहा है, ''तब सिखानेवालों की चमक आकाशमण्डल की सी होगी, और जो बहुतों को धर्मी बनाते हैं, वे सर्वदा की नाईं प्रकाशमान रहेंगे'' (दानिय्येल 12:3)।

मैं फिर पूछता हूं कि **''आप कितने बुद्धिमान हो?''**

---

4 मसीहियत के पहलू

टी. पियर्स ब्राउन

प्रेरितों 2:42 में हम पढ़ते हैं, *''और वे प्रेरितों से शिक्षा पाने, और संगति रखने, और रोटी तोड़ने, और प्रार्थना करने में लौलीन रहे।''* जैसा मसीह ने ठहराया है, वैसा जीवन पाने या वैसी कलीसिया होने के विचार में दिलचस्पी रखने वाले हर किसी के लिए इसमें बार-बार बताए गए मसीहियत के चार पहलुओं का महत्व होना आवश्यक है।

पहला, हमें प्रेरितों की शिक्षा पर विचार करना आवश्यक है। यह क्या है? हमें इसका पता कैसे चलता है? इससे क्या फर्क पड़ता है? क्या हमारे लिए इसमें बने रहना अच्छा है? पौलुस ने तीमुथियुस से कहा, *''इन बातों को सोचता रह और इनमें अपना ध्यान लगाए रह, ताकि तेरी उन्नति सब पर प्रगट हो। अपनी और अपने उपदेश की चौकसी रख''* (1 तीमुथियुस 4:5)। यदि तीमुथियुस से कही पौलुस की बात से यह पता नहीं चलता है कि शिक्षा आवश्यक है, तो फिर इससे और क्या पता चलता है?

प्रेरितों की शिक्षा को देखते हुए हमारे लिए कुछ महत्वपूर्ण अंतर करना आवश्यक है। पहला, हमें पुराने और नये नियम में अंतर करना आवश्यक है।

हमें यह देखना आवश्यक है कि विश्वास और विचार के बीच अंतर है। विश्वास परमेश्वर के वचन को सुनने से आता है (रोमियों 10:17)। विचार यह अनुमान है कि परमेश्वर क्या चाहता है। मेरा विश्वास है कि पतरस ने प्रेरितों 2 में वर्णित बातों का प्रचार किया। इस पर मेरा विचार है कि परमेश्वर ने यूहन्ना को क्यों नहीं चुना, उसी को क्यों चुना।

हमें अस्थाई और सदा तक रहने वाली बातों में अंतर करना आवश्यक है। मैं आज भी लोगों को परमेश्वर के उपायों को आश्चर्यकर्म कहते हुए सुनता हूं। वे इस प्रकार की बातें करते हैं ''बर्लिन की दीवार का गिरना आश्चर्यकर्म है।'' उपाय और आश्यर्चकर्म में अंतर है और था। आश्चर्यकर्मों को परमेश्वर की सामर्थ के पक्के प्रमाण और परमेश्वर के वचन की महिमा के रूप में देखा और माना जा सकता है।

हमें उस परिस्थति और उसकी शर्तों के बीज जो हमारे ऊपर लागू होती हैं, अंतर करना आवश्यक है। रोटी तोड़ने की बात और उसमें सहभागिता की बात आवश्यक है। यीशु द्वारा प्रभु भोज की स्थापना किए जाने से पहले, उसके चेले पानी का घड़ा उठाए एक आदमी के पीछे गए, उन्होंने अटारी वाले कमरे में तैयारी की, और वह उन बारहों के साथ खाने के लिए झुका। ऐसे लोग हैं जो लगता है कि यह मानते हैं कि यदि हम यीशु के पीछे चलते

हैं तो हमें उसके उदाहरण को मानते हुए अटारी वाले कमरे में इकट्ठा होना आवश्यक है। हमें इस काम में मिलने वाले नियमों और आज्ञा को मानने के साधन में अंतर को समझना आवश्यक है। 1 कुरिन्थियों 14:26-40 में कम से कम चार नियम मिलते हैं। 1 सब कुछ शालीनता से और व्यवस्थिति ढंग से हो। 2 परमेश्वर गड़बड़ी का परमेश्वर नहीं है। 3. स्त्रियां अधीनता में रहें। 4. सब कुछ उन्नति के लिए हो। इन नियमों को मानने के साधन अलग-अलग पस्थितियों में अलग-अलग हो सकते हैं।

समयों की परम्परा के सम्बन्ध में ईश्वरीय नियम और कोई बात के बीच अंतर का पता होना आवश्यक है। पवित्र चुम्बन और ओढ़नी ओड़ने को परम्परा माना जाता है। इनमें शामिल नियम बरकरार हैं।

इनमें सामान्य नियम हैं; हमें कुछ समयों पर कुछ तरीके से कुछ बातें करनी आवश्यक होती हैं। हम उन्हें मानने को बाध्य हैं या नहीं यह कैसे बताएं। उसे बताने का सबसे आसान तरीका यह है कि जब परमेश्वर की प्रेरणा से दिए निर्देशों और उदाहरण से यह पता चलता है कि किसी गतिविधि का कोई पहलू आवश्यक हैं तो हमें इसका पता होना आवश्यक है। किसी भी समय में किसी भी रिकॉर्ड में ऐसा कुछ नहीं है जो यह बताता हो कि ऊपरी कमरे का महत्व था या वह आवश्यक है। उदाहरण और आज्ञा की हर बात से यह संकेत मिलता है कि दिन का महत्व है।

इस लेख में इतनी जगह नहीं है कि इसमें हम इस बात पर विचार करें कि आरम्भिक मसीही प्रार्थनाओं में लौलीन रहे। परन्तु हर मसीही और हर मण्डली को आज प्रार्थना करना सीखने के महत्व को समझना आवश्यक है जैसा कि बाइबल बताती है। प्रार्थना के स्वभाव और महत्व को सीखने का शायद सबसे बढ़िया ढंग यीशु और पौलुस की प्रार्थनाओं का अध्ययन करना है।

थिस्सलुनीके में पौलुस

ऐलन ई फ्लैक्समैन

प्रेरित पौलुस के कामों को जिन्हें आम तौर पर उसकी ''मिशनरी यात्राएं'' नाम दिया जाता है, पढ़ना बड़ा दिलचस्प है। जीवन गाथाओं के लेखक की कलम से मान कर अगर हम उन्हें पहली बार पढ़ रहे हैं, तो कम से कम हमें लगेगा कि वे गाथाएं बड़ी रोमांच से भरी हैं। परन्तु यह जानते हुए, जैसा कि हम जानते हैं कि ये रोमांच भरे काम परमेश्वर की प्रेरणा से दिए गए वचन का महत्वपूर्ण भाग हैं, न केवल हमारा ध्यान खींचते हैं बल्कि हमें सवाल करने के लिए उकसाते भी हैं जो कि हम न उठाते यदि हम केवल किसी उपन्यास को पढ़ रहे होते।

उदाहरण के लिए एक बात जो हम कर सकते हैं वह यह है, पौलुस ने थिस्सलुनीके में ''अम्फिपुलिस और अपुल्लोनिया'' में से होकर जाना ही क्यों चुना, जबकि पिछली बार पौलुस के समय के महत्वपूर्ण नगर का उल्लेख हुआ था। ''थिस्सलुनीके क्यों?'' हम कुछ अनुमान लगा सकते हैं, परन्तु हम केवल इतना ही कर सकते हैं। क्योंकि परमेश्वर

का वचन हमारे लिए इस प्रश्न का उत्तर नहीं देता। एक बात जो हमें पता है वह यह है थिस्सलुनीके एक नगर था, जहां ''यहूदियों का आराधनालय'' था (प्रेरितों 7:1) और पौलुस इन यहूदी आराधनालयों का इस्तेमाल उन स्थानों के रूप में किया करता था जहां पर सुसमाचार सुनाने के लिए उसे गैर-मसीहियों में से लोग मिल सकते थे। उसके लिए यह उसका सबसे महत्वपूर्ण काम था।

क्या कलीसिया के रूप में आज हमें यही करने की आवश्यकता नहीं है? इस लेखक को तो यही लगेगा कि हमें ऐसी जगहों का पता लगाने को, अपनी प्राथमिकता बना लेनी चाहिए जहां सुसमाचार का संदेश सुनने वाले लोग हों। मैं पौलुस के आक्रामक परन्तु प्रेमपूर्वक ढंग के लिए यानी उस ढंग के लिए जो पौलुस ने नई कलीसिया के लिए इस मामले में अपनाया, दिल से उसे धन्यवाद देता हूं।

पौलुस सुसमाचार सुनाने के अपने काम के लिए सचमुच में आक्रामक ढंग इस्तेमाल किया करता था। ''आक्रामक'' से हमारा आशय यह नहीं है कि वह हथियारों, मुक्कों, रैलियों या इश्तिहार लेकर भीड़ का इस्तेमाल करता था। हमारे कहने का अर्थ यह है कि पौलुस आगे बढ़कर पहल करता था। और क्या हम जानते हैं कि ऐसा वह प्रेम से करता था, नहीं तो उसने अपने साथी मसीहियों को ऐसा करने के लिए नहीं कहना था (इफिसियों 4:15) ध्यान दें कि पौलुस थिस्सलुनीके में जाकर, आराधनालय में गया, वहां उसने यीशु मसीह का विषय उठाया और लगातार तीन शनिवार तक अपने काम में आक्रामक होना है! सरगर्म होना यही है! यह काम में लगे होना है (फिलिप्पियों 3:3)! क्या आज हम सुसमाचार के प्रसार में वैसे ही आक्रामक ढंग से लगे हुए हैं?

यह भी ध्यान दें कि पौलुस उनके साथ ''पवित्र शास्त्रों से वाद-विवाद'' किया करता था (प्रेरितों 17:2)। परमेश्वर ने हमें विवेक बुद्धि दी है और हमें इसका इस्तेमाल सुसमाचार के प्रचार में करना चाहिए। उसने यशायाह के द्वारा कहा था कि, ''आओं हम आपस में वाद-विवाद करें ...।'' प्राचीन काल के लोगों से उसने यह भी कहा था कि *''अपने प्रमाण दो''* (यशायाह 1:18; 41:21)। परमेश्वर पतरस के माध्यम से हम से कहता है कि ''जो कोई तुम से तुम्हारी आशा के विषय में कुछ पूछे, उसे उत्तर देने के लिये सर्वदा तैयार रहो, पर नम्रता और भय के साथ'' (1 पतरस 3:15)।

यहूदा 3 में उसी आक्रामक परन्तु विवेकपूर्ण ढंग से हमें ''उस विश्वास के लिए पूरा यत्न'' करने के लिए कहा गया है, जैसे कि हमने देखा कि पौलुस करता था।

शायद हमें अपने आप से कुछ प्रश्न पूछने चाहिए। क्या मुझ में सुसमाचार का प्रचार करने की यह उत्सुक्ता है जो कि पौलुस की सभी गतिविधियों में और विशेषकर थिस्सलुनीके में जाने की उसकी बातों में साफ पता चलती हैं। जिस मण्डली में मैं हूं क्या उसका लाखों खोए हुओं के पास मसीह का सुसमाचार ले जाने का कोई आक्रामक कार्यक्रम है? थिस्सलुनीके में और जहां भी और कहीं गया, पौलुस द्वारा दिखाए ''उस विश्वास के लिए पूरा यत्न'' के ढंग के लिए प्रोत्साहित करने के मैं लिए क्या कर रहा/रही हूं?

''आपने सुना होगा''

जॉन स्टेसी

शायद आपने सुना होगा, कुछ लोग कहते हैं कि जो लोग मसीह की कलीसिया में हैं वे समझते हैं कि केवल वही सही हैं और बाकी सब गलत हैं। ऐसा वे लोग कहते हैं जो अपनी गलतियों को मानना नहीं चाहते और उन लोगों का उपहास करते हैं जो आज इस बीसवी सदी में पहली शताब्दि की मसीहीयत को पुनस्थापित करना चाहते हैं। किन्तु जो लोग गलती में हैं उन्हें चाहिए कि वे अपनी गलती को मानें और सही रास्ते पर आ जाएं। रोमियों 14:23 में पौलुस ने कहा था कि ''जो कुछ विश्वास से नहीं है वह पाप है।'' इस का अर्थ यह है कि यदि आप धार्मिक दृष्टिकोण से किसी बात को मान रहे हैं और जानते भी हैं कि वह बात सही नहीं है, तो फिर आप पाप में हैं। जो लोग मसीह की कलीसियाओं में हैं वे सब मनुष्य ही हैं और उन से गलतियां हो सकती हैं। पर हम एक बत अवश्य मानते हैं, और वह यह कि केवल बाइबल में लिखी बातें ही सही हैं और जो लोग उस में लिखी बातों पर नहीं चलते हैं वे सब गलत हैं। यदि दो व्यक्ति अलग-अलग शिक्षाएं देते हैं तो या तो उन में से एक गलत होता है या फिर दोनों ही गलत होते हैं। पृथ्वी या तो गोल है या फिर गोल नहीं है। बपतिस्मा लेना या तो आवश्यक है या फिर आवश्यक नहीं है। कैसे हम जान सकते हैं कि कोई बात सही है या नहीं? कैसे हम जान सकते हैं कि कोई बात सही है या नहीं? मनुष्य के मतानुसार नहीं। यिर्मयाह 10:23 में लिखा है: ''हे यहोवा मैं जान गया हूँ कि मनुष्य का मार्ग उसके वश में नहीं है, मनुष्य चलता तो है, परन्तु उसके डग उसके अधीन नहीं हैं। केवल बाइबल से ही हम यह जान सकते हैं कि सही क्या है। पौलुस ने 2 तीमुथियुस 3:16, 17 में लिखकर कहा था, ''हर एक पवित्रशास्त्र परमेश्वर की प्रेरणा से रचा गया है, और उपदेश, और समझाने और सुधारने, और धर्म की शिक्षा के लिये लाभदायक है। ताकि परमेश्वर का जन सिद्ध बने, और हर एक भले काम के लिये तत्पर हो जाए।'' हकीकत यह है कि अधिकांश लोग स्वयं बाइबल को न पढ़कर अपने प्रचारकों की बातों पर विश्वास करते हैं। वे इस बात पर कभी विचार नहीं करके देखते कि क्या जिस प्रकार की धार्मिक बातों पर वे चल रहे हैं और जिन कलीसियाओं के वे सदस्य हैं, क्या उन के विषय में बाइबल में लिखा है या नहीं? मैं आप से आग्रह करता हूँ कि आप बाइबल को पढ़िए, और यदि आप ऐसा करेंगे तो आप अनुभव करेंगे कि साम्प्रदायीक मसीहीयत बाइबल की शिक्षा के विरूद्ध है।

महत्वपूर्ण शब्द

किसी ने जन सम्पर्क का लघु पाठ्यक्रम दिया और यह कुछ इस प्रकार से था: छह सबसे महत्वपूर्ण शब्द हैं: ''**मानता हूं कि मैं गलत हूँ।**'' पांच सबसे महत्वपूर्ण शब्द हैं: ''**तुमने बहुत अच्छा काम किया।**'' चार सबसे महत्वपूर्ण शब्द हैं: ''**आपका क्या विचार है?**'' तीन सबसे महत्वपूर्ण शब्द हैं: ''**आप चाहो तो।**'' दो सबसे महत्वपूर्ण शब्द हैं: ''**आपका धन्यवाद।**'' एक सबसे महत्वपूर्ण शब्द हैं: ''**हम।**'' अंत में, एक सबसे कम महत्वपूर्ण शब्द है: ''**मैं।**'' जब हम खुद को इतनी देर तक भूल जाते हैं कि दूसरों को मानकर उन्हें कुछ आदर देकर उनका सत्कार कर सकें तो यह बहुत अच्छी बात होती है। दूसरों को खुशी मिलती है, और फिर बाद में हम भी खुश होते हैं।